(7) उदाहरण प्रविधि
[ILLUSTRATION TECHNIQUE]

शिक्षण में इस प्रविधि का विशेष महत्व है। इस शिक्षण-प्रविधि में उदाहरणों की सहायता से पाठ्य-विषय पर प्रकाश डाला जाता है। आधुनिक शिक्षा में इन उदाहरणों पर अधिक बल दिया जा रहा है। उदाहरण, छात्रों के दैनिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, छात्र उनसे परिचित होते हैं। अत: इनकी सहायता से कठिन और अज्ञात विषय को सरल और रोचक ढंग से छात्रों के समक्ष रखा जाता है, जिससे वे सरलतापूर्वक अपेक्षित विषय का

Scanned by TapScanner

ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। अप्रत्यक्ष और सूक्ष्म तथ्यों को उदाहरणों की सहायता से प्रत्यक्ष और मूर्त रूप दे दिया जाता है। इससे छात्रों को समझाने में कठिनाई नहीं होती।

यह प्रविधि अधिक मनोवैज्ञानिक मानी जाती है। इसमें छात्रों की बुद्धि को विचारात्मक तथा चिन्तनशील बनाने की शक्ति है। इससे छात्रों का मानसिक विकास होता है। उदाहरण दो प्रकार के हो सकते हैं—मौखिक उदाहरण तथा प्रदर्शनात्मक उदाहरण।

मौखिक उदाहरण—मौखिक उदाहरण से अध्यापक छात्रों के मस्तिष्क में शब्दों द्वारा प्रस्तुत विषय का चित्र उपस्थित करने का प्रयास करता है। वह विषय को सरल और रोचक रूप में छात्रों के समक्ष रखता है। उदाहरण देते समय यह ध्यान में रखना पड़ता है कि उदाहरण छात्रों के देखे-सुने हों ताकि उनकी व्याख्या स्वयं छात्रों के द्वारा कराई जा सके; फिर उसके आधार पर अप्रस्तुत विषयों को समझाया जाए।

ध्यान देने योग्य बातें—(1) उदाहरण की भाषा सरल तथा रोचक होनी चाहिये और दृष्टान्त प्रत्यक्ष विषयों से सम्बन्धित होने चाहियें।

(2) उदाहरण इस प्रकार का होना चाहिये कि छात्र सुगमतापूर्वक समझ लें। साथ ही साथ उदाहरणों की अधिकता भी नहीं होनी चाहिये।

प्रदर्शनात्मक उदाहरण—कभी-कभी छोटे बच्चों को मौखिक उदाहरणों द्वारा सूक्ष्म बातों का ज्ञान कराना कठिन होता है। उस दशा में अध्यापक को स्थूल उदाहरण सामने रखना पड़ता है। इन उदाहरणों को आकर्षक और रोचक होना चाहिए। इससे छात्रों के मस्तिष्क में विषय का स्थायी ज्ञान हो जाता है। ऐसी स्थिति में चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, ग्राफ, चार्ट आदि दिखाए जाने चाहियें। अध्यापक वाणिज्य के सूक्ष्म विषयों का ज्ञान कराने के लिए इन वस्तुओं को दिखाकर समझा सकता है। इनके अतिरिक्त यदि अध्यापक आवश्यक समझे तो विषय के अनुकूल वस्तुओं को तैयार करके भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

विचारणीय विषय यह है कि उदाहरण सरल और आकर्षक हों ताकि छात्रों को ग्रहण करने में कठिनाई न हो और उनसे अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सहायता मिल सके। एक विषय का ज्ञान कराने में कई उदाहरणों को नहीं रखना चाहिए, क्योंकि इसमें संदेह और भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती है। उदाहरण देते समय स्पष्टता पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

(8) व्याख्या प्रविधि

[EXPLANATION TECHNIQUE]

कभी-कभी विषय-वस्तु को सरल, सुगम तथा बोधगम्य बनाने हेतु अध्यापक को व्याख्या प्रविधि का सहारा लेना पड़ता है। सामान्य पद्धति से छात्र किन्हीं-किन्हीं स्थलों पर विषय-वस्तु को आत्मसात करने में असफल रहते हैं, कहीं-कहीं कोई भावात्मक स्थल आ जाता है या जटिल, दुरूह विषय-वस्तु आ जाती है, तब इन स्थलों पर

Scanned by TapScanner

अध्यापक विषय-वस्तु को व्याख्या के माध्यम से अपने छात्रों को समझा सकता है। व्याख्या किसी विषय को सरलतम एवं अधिकतम रूप से प्रस्तुत करने की एक कला है। फलतः व्याख्या के समय अध्यापक छात्रों को सरलतम भाषा में अधिक से अधिक विषय-वस्तु बतलाता है। व्याख्या के द्वारा प्रस्तुत विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जाता है। व्याख्या करते समय अध्यापक का उद्देश्य अपना पांडित्य प्रदर्शन करना न होकर विषय-वस्तु को सरलतम रूप में प्रस्तुत करना होना चाहिये।

सफल व्याख्या करना बड़ा ही कठिन काम है। इसके लिये अध्यापक को विषय-वस्तु का पर्याप्त एवं ठोस ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इस ज्ञान के अभाव में अध्यापक, कभी भी सफल व्याख्याता नहीं बन सकता है। अध्यापक को व्याख्या करने के लिये पर्याप्त भाषा-ज्ञान होना आवश्यक है। अपने भाषा ज्ञान के द्वारा अध्यापक विषय-वस्तु को विभिन्न प्रकार की शैली में तथा विभिन्न प्रकार के शब्दों से व्यक्त कर सकता है। दूसरे शब्दों में, अध्यापक के पास अपने विचारों को सरलतम रूप में व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिये।

व्याख्या करते समय अध्यापक को कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिये। व्याख्या सदैव वैज्ञानिक विधि से ही प्रस्तुत की जानी चाहिये। भाषा सरल तथा बोधगम्य हो। व्याख्या कभी भी उपदेशात्मक रूप में प्रस्तुत न की जाये। व्याख्या को यथासम्भव सरस तथा आकर्षक बनाया जाये। अध्यापक व्याख्या को वैज्ञानिक बनाने के लिये सम्बन्ध तथा तुलना का भी सहारा ले सकता है। अध्यापक को व्याख्या करते समय उन सभी शिक्षण सूत्रों का अनुसरण करना चाहिये, जिनका उल्लेख पीछे एक अध्याय में किया गया है। व्याख्या लम्बी नहीं होनी चाहिये। लम्बी व्याख्या छात्रों में नीरसता लायेगी। नीरसता दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों को भी व्याख्या का सक्रिय सदस्य बनाया जाये। अध्यापक बीच-बीच में छात्रों से प्रश्न पूछकर नीरसता को काफी मात्रा में दूर कर सकता है। व्याख्या करते समय अध्यापक श्यामपट्ट, लपेटफलक तथा अन्य सहायक सामग्री का भी प्रयोग कर सकता है। इससे व्याख्या में रोचकता का समावेश होता है।

(9) अभ्यास प्रविधि

[DRILL TECHNIQUE]

शिक्षण में अभ्यास का बड़ा महत्व है। थॉर्नडाइक ने तो इसको आधार बनाकर सीखने का एक नियम ही बना डाला था। थॉर्नडाइक का अभ्यास का नियम (Law of Exercise) अभ्यास पर ही निर्भर है। वाणिज्य में अभ्यास की रीति का प्रयोग थॉर्नडाइक के इस नियम के आधार पर ही किया जाता है। अभ्यास के द्वारा हम छात्रों की प्रतिक्रियाओं को एक निश्चित रूप में आबद्ध करते हैं। जब छात्रों की कुछ प्रतिक्रियायें एक निश्चित रूप में आबद्ध हो जाती हैं, तब उन प्रतिक्रियाओं को करने के लिए छात्रों को किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती है, क्योंकि वे प्रतिक्रियायें उसकी

Scanned by TapScanner

आदत का रूप ग्रहण कर लेती हैं। छात्र विशेष परिस्थितियों में अभ्यास के बिना प्रयास की विशेष प्रतिक्रियायें करने लगता है।

वाणिज्य शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अभ्यास प्रविधि का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। कुशलता, दक्षता तथा विषय-वस्तु के ज्ञान के दृढ़ीकरण के लिये अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। **एम० पी० मुफात** (M. P. Muffatt) का यह कथन है कि, "अभ्यास के द्वारा छात्रों में आदतों का निर्माण, कौशल की प्राप्ति तथा परीक्षा के प्रति तत्परता का विकास किया जा सकता है।" बिल्कुल सत्य है। अभ्यास के द्वारा छात्र विषय-वस्तु पर प्रभुत्व प्राप्त करता है।

अभ्यास अनेक प्रकार से कराया जा सकता है, किन्तु प्रश्नों के माध्यम से अभ्यास कराने की प्रणाली अत्यन्त प्रचलित है। इस प्रणाली के अन्तर्गत छात्रों से अभ्यासात्मक प्रश्न (Drill Questions) पूछे जाते हैं। अभ्यासात्मक प्रश्न पूछते समय अध्यापक को बड़ी सतर्कता रखनी चाहिये। प्रश्न छोटे हों तथा ऐसे प्रश्न पूछे जायें, जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में न आये। ऐसे प्रश्न पूछे जायें, जिनका कोई उत्तर हो। प्रश्नों को प्रभावोत्पादक बनाने हेतु कक्षा में प्रतियोगिता की भावना एवं क्रिया का भी विकास किया जा सकता है।

(10) कहानी-कथन प्रविधि
[STORY-TELLING TECHNIQUE]

इस प्रविधि के अन्तर्गत कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि बातें आती हैं। यह प्रविधि बहुत कम प्रयोग में लाई जाती है। अध्यापक वर्ग इस प्रविधि की उपयोगिता को कम समझता है। छोटी कक्षाओं में छात्रों का मस्तिष्क कौतूहलपूर्ण होता है और वे कहानियों से अधिक प्रेम करते हैं। अत: उन्हें कहानियों द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिये। वाणिज्य में उद्योग व्यवसाय, जीवन-स्तर आदि अनेक ऐसे प्रकरण हैं, जिनको कहानी-कथन प्रविधि से बालकों को समझाया जा सकता है। कहानियों का सम्बन्ध पाठ्य-विषय तथा दैनिक जीवन से होना चाहिये। यह रीति मनोवैज्ञानिक है।

इस प्रविधि में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(1) अध्यापक को रोचक, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण शैली में कहानी सुनाना चाहिये।

(2) कहानियाँ मौखिक रूप में सुनाई जानी चाहियें तथा बीच-बीच में प्रश्न भी पूछे जाने चाहियें ताकि छात्र अच्छी तरह रुचि से सुनें और अभीष्ट विषय का ज्ञान प्राप्त करें।

(3) शान्त वातावरण में छात्रों की मानसिक स्थिति के अनुसार कहानी सुनानी चाहिये।

(4) कहानी को सोद्देश्य होना चाहिये।

कहानी-कथन प्रविधि प्रारम्भिक तथा निम्न कक्षाओं के लिये उपयोगी होता है, क्योंकि जूनियर हाईस्कूल की कक्षाओं तक छात्रों का मानसिक स्तर इतना कम विकसित होता है कि उन्हें अन्य शिक्षण प्रविधियों से पर्याप्त लाभ नहीं हो पाता। उन्हें

Scanned by TapScanner

कहानी-कथन प्रविधि से ही अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है। यदि कहानियाँ परिष्कृत होती हैं और अध्यापक उनके द्वारा आर्थिक विषयों से सम्बन्धित तथ्यों को स्पष्ट करता जाता है, तब इससे पर्याप्त लाभ होता है।

Scanned by TapScanner